# इण्डियन थिसोसॉफिस्ट

फरवरी 2022 खण्ड 120 अंक 2

## विषयवस्तु

**अध्यक्षीय भाषण** **85–90**

**समाचार और टिप्पणियां** **91–110**

संपादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम



**थिओसॉफिकल सोसायटी** ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हों या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध न रखते हों, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु कें प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इसका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

**थिओसॉफी** ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिओसॉफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिओसॉफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिश्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिओसॉफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

# अध्यक्षीय भाषण

## थियोसॉफिकल सोसाइटी के 146वें अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन 27 से 30 दिसम्बर 2021, में ऑन लाइन प्रस्तुत

मित्रो शुभकामनायें! मैं आप सभी का थियोसॉफिकल सोसाइटी के 146वें अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक अधिवेशन के प्रारम्भ के अवसर पर स्वागत करता हूं। एक बार फिर साथ में इस प्रकार की प्रतीतात्मक विधि से मिलना बहुत अच्छी बात है।

आप में से अनेक जानते होंगे कि 2020 टीएस के लिये एक ऐतिहासिक वर्ष था जिसमें इसकी 145 वर्ष के इतिहास में एक पूर्णतया प्रतीतात्मक अधिवेशन सम्पन्न हुआ था। परिस्थितियों ने भौतिक एकत्रण की आज्ञा नहीं दी यद्यपि विश्व युद्धों की अवधि में भी हम भौतिक एकत्रण को व्यवस्थित कर सके थे। किन्तु पिछला वर्ष अलग प्रकार का था, ऐतिहासिक था।

जब भविष्य में इतिहास की पुस्तकें लिखी जायेंगी, तब वर्ष 2020 को मानवता के लिये एक विलक्षण वर्ष लिखा जायेगा, एक ऐतिहासिक वर्ष, एक विशेष बिन्दु। अनेक विधियां हैं जिनके द्वारा हम इसका वर्णन कर सकते हैं; इसके अनेक पहलू हैं; किन्तु यह बिलकुल स्पष्ट है कि उस वर्ष में कुछ महान परिवर्तन हुआ है; इसकी विवेचना के अनेक तरीके हैं, किन्तु सनातन ज्ञान के दृष्टिकोंण से, या प्रेक्षण की तीक्ष्णता के स्तर से यह स्पष्ट है कि कुछ नया था। इस महामारी के माध्यम से जिसका अभी भी अनुभव किया जा रहा है, एक विश्वव्यापी पहचान हमारे ऊपर थोपी गयी है हमारी परस्पर अंतर्निभरता बिना वित्तीय व्यवस्थाओं, शैक्षिक स्तर, नश्ल, जाति, धर्म, लिंग या रंग पर ध्यान दिये।

कोई इस महामारी के साझा मानवीय अनुभव के बाहर नहीं था। हां यह अवश्य है कि अधिकांश लोगों में यह एक डर था अपने प्रिय जनों और अपनों के लिये – किन्तु इसकी पहचान हुयी है। इस विश्वव्यापी पहचान प्रकरण के साथ साथ, ऐसा लगता है कि इसके साथ साथ मानवीय चयन के प्रभाव से एक समय अंतराल में मानव निर्मित पर्यावरणीय प्रभाव के कारण इस ग्रह



के लिये मानवीय जिम्मेदारी डूब और जल रही है।

अब हम वह देख रहे हैं जिसे ''पूर्वानुमेय'' कहा जा सकता है, किन्तु पर्यावरण में भयंकर परिणाम या प्रभाव ला चुका है। यह पहचान हो चुकी है कि हमारे पूर्व के स्वभाव के बावजूद भी मानवता प्रकृति के बाहर नहीं है। हम उससे अलग, उसके ऊपर, या उसके प्रति निष्कृय नहीं हैं। फिर से, यह एक उदय होती हुई पहचान है जो विश्वस्तरीय परिवर्तन हमारे पर हठात पड़ रहा है कि हम मौसम में परिवर्तन देख रहे हैं और वे मॉडेल्स जो उनके प्रभावों की पहचान करने के लिये विकसित किये गये हैं। यह कुछ नया है। वे अलगाव जो जो हमने अपने स्वभाव में किसी राष्ट्रगत या व्यक्तिगत कारणों से उत्पन्न किये हैं वे कम से कम प्रश्नों के घेरे में आ रहे हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण क्षण है कि हम किस प्रकार एक मानव परिवार के रूप में प्रतिक्रिया करेंगे – यह देखा जाना है।

कभी कभी, एक व्यक्ति के रूप में, एक सत्य की हल्की सी भी दृष्टि, जीवन या दिशा परिवर्तित कर देती है। किन्तु कभी कभी अर्थ यह होता है कि सत्य की मांग ऐसी होती है, कुछ ऐसा देख कर जो अत्यधिक आवश्यक लग रहा है, लोगों को अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करने को बाध्य कर देते हैं और हो सकता है कि उन्होंने जो देखा है उससे विकर्षित कर दें। टी.एस. इलिअट के शब्दों में ''हम विकर्षण से विकर्षित हो कर विकृष्ट हो जाते हैं।'' तो ये कुछ सम्भावनायें हैं।

एच.पी.ब्लैत्सकी (एच.पी.बी.), थियोसाफिकल सोसाइटी के संस्थापकों में से एक, ने सत्य की शक्तियों पर विवेचन करते हुये एक महत्वपूर्ण कथन कहा था। उन्होंने कहा है, 'सत्य अपनी ही शक्ति के कारण अस्तित्व में रहेगा। इसे केवल देखना और गले लगाना पड़ेगा।' सत्य, जैसा कि उन्होंने प्रस्तुत किया है, के अनुसार यह है कि, ''सत्य की इच्छा कहुत कम मनों में होती है और उसे सुन पाने की शक्ति और भी कम लोगों में होती है।'' यदि कोई विश्वास करता है कि यह सही विश्लेषण है, तो इसका अर्थ है कि हम थियोसाफिकल सोसाइटी के सदस्य, जो इसके मोटो पर विश्वास करते हैं कि, ''कोई ऐसा धर्म (या सम्प्रदाय या कोई वचारिक समूह) नहीं है जो सत्य से बढ़ कर है'' तो हम में से प्रत्येक के सामने एक भूमिका है जो प्रतीत

कराता है कि सत्य की खोज का कुछ मूल्य है।

ऐसा इसलिये है कि यह हमारे ऊपर यह दायित्व आरोपित करता है कि हम न केवल सत्य की खोज करते रहें और जब सत्य की प्रकृति या सत्य हमारे पास आये तो हम उसका कष्ट भी सहें, उसकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रतिक्रिया करें, और यह नहीं कि जा कर सो जायें। संसार में यह एक गम्भीर आवश्यकता है और उनका कर्तव्य जिनका इस ओर झुकाव है।

इस वर्ष के अधिवेशन के परिवेश और इसके मूल विचार बिन्दु, हमारी भूमिका कि हम अधिक पूर्णता से जीवन जी सकें, वर्तमान में रहना, सीखना, देखना, और अन्तःजीवन की चुनौतियों को स्वीकारना। इस उपक्रम के साथ, इस बार हम सभी से अनुरोध करना चाहेंगे कि जब मैं इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करने के लिये महान गुरुओं के परम्परागत आह्वान का उच्चारण करेंगे तब सभी उठ खड़े हों :—

**वे जो शाश्वत प्रेम के मूर्त रूप हैं**
**इस सोसइटी को अपनी सहायता और निर्देशन का आशीर्वाद दें**
**जो उनके कार्यो की धारा बनने के लिये स्थपित की गयी थी**
**वे अपने प्रज्ञान से इसे प्रेरित करें**
**अपनी शक्ति से इसे सशक्त करें**
**और अपने कार्यों से इसे ऊर्जावान करें।**

इस बिन्दु पर मैं थियोसॉफिकल सोसाइटी के इस 146वें अधिवेशन को उद्घाटित घोषित करता हूं।

*  *  *  *  *

भारतीय अनुभाग, जिसकी सदस्यों की संख्या 9039 (इनमे से 443 आजीवन सदस्य) है, अंतर्राष्ट्रीय सोसाइटी में सबसे अधिक है। ये 480 लाजों और 13 अध्ययन केन्द्रों में फैले हुये हैं। कोविड 19 का एक धनात्मक परिणाम यह हुआ है कि ऑन लाइन भाषणों का विकास हुआ है जिसके परिणाम स्वरूप सुनने वालों की उपस्थिति में उठान आया है और अनेक नये वक्ताओं की पहचान हुयी है जिनमें से अनेक युवा थियोसॉफिस्ट हैं। कालेज



में नये भवन का निर्माण पूर्ण हुआ है जिससे छात्राओं की संख्या 300 बढ़ गयी है। और, ऐसे विधान हैं कि व्यवस्थापन और शिक्षण के क्षेत्र में नये कोर्स प्रारम्भ किये जायेंगे। बेसैन्ट एजूकेशन फेलोशिप दो विद्यालयों की व्यवस्था करता है जो अनुभाग के परिसर में हैं। एक भौतिक बैठक में डा0 ऐनी बेसैंट की जन्म वार्षिकी मनाई गयी। स्थापना दिवस, अडयार दिवस और श्वेत कमल दिवस भी ऑन लाइन बैठकों के माध्यम से मनाये गये। आजीवन सदस्यों को उनकी उपस्थिति की पुष्टि करने का अवसर प्रदान किया गया जिनकी प्रतिक्रिया न आने के परिणाम स्वरूप 1188 में से 745 सदस्य ड्राप कर दिये गये। इसके कारण पिछले वर्ष की अपेक्षा पूरी सदस्यता के 14 प्रतिशत सदस्य कम हो गये।

129वां राष्ट्रीय कन्वेंशन 2, दिसम्बर में  आनलाइन संचालित किया गया। इसकी थीम थी ''जागरूकता जीवन को परिवर्तित करती है।'' जो थियोसॉफिकल सोसाइटी फिलीपीन्स के पूर्व महासचिव विक हाओ चिन, जूनियर, जो इस विषय के निष्णांत भी थे, की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। राधा बर्नियर, थियोसॉफिकल सोसाइटी की सातवीं अंतर्राट्रीय अध्यक्ष, के स्मरण में पहला सामान्य वक्तव्य 30 अक्टूबर को संचालित किया गया, जिसके की नोट भाषण, ''राधाजी, उनकी लाइफ और उनके प्रभाव पर एक नजर'' को पूरे विश्व के 90 प्रतिभागियों ने सुना। 97 वां ईस्टर अधिवेशन (मूलतः इसे साउथ इण्डियन कान्फरेंस कहते थे) अप्रैल में आनलाइन ''थियोसॉफी और जे. कृष्णमूर्ति'' थीम पर संचालित की गयी। इसमें 250 प्रतिभागी पंजीकृत हुये थे जिनमें से 68 भारत के बाहर से थे। इस कान्फरेंस का अतिम विचार यह था कि ''कृष्णमूर्ति की शिक्षायें थियोसॉफी की अभिपुष्टि हैं''। 16 फेडरेशनों में से 7 के अधिवेशन आनलाइन हुये और तीन के व्यक्तिगत। इनमें से एक था तूलगू फेडरेशन का शताब्दी समारोह, जिसे 2020 में करने की योजना थी किन्तु उसे करोना महामारी के कारण नहीं किया गया था। उसे एक वर्ष बाद उन्हीं तिथियों को सम्पन्न किया गया। इसमें 100 डेलीगेटों और 150 सामान्य जनों ने भाग लिया।

वार्षिक अध्ययन शिविर ऑन लाइन संचालित किया गया। इसका निदेशन वेन. औलैण्डे थेरो ने ''माइंडफुलनेस, द हार्ट ऑफ बुद्धिस्ट

मेडिटेशन'' पर किया। इसमें 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पापुलर हिमालयन अध्ययन केंद्र भोवाली में इस वर्ष एक भी अध्ययन शिविर आयोजित नहीं हो पाया। 80 से अधिक अध्ययन बैठकें ''महात्मा लेटर्स टू एपी सिनेट'' और अन्य पुस्तकों पर आयोजित की गयीं। अनेक विशेष वक्तव्य, सेमीनार/कार्यशाला और अन्य कार्यक्रम ऐसे आयोजित हुये जिनमें 15 नेशनल वक्ताओं नें अपनी प्रस्तुतियां दीं। कुल मिलाकर आनलाइन प्रणाली के बृहत प्रयोग के कारण इस वर्ष थियोसॉफी का इस दशक का सबसे अधिक प्रसार हुआ। टीओएस अनेक दिशाओं जैसे महिला सशक्तीकरण, कोविड 19 से प्रभावित लोगों के बचाव और उनकी चिकित्सा के लिये सहयोग, और आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों और साइक्लोन से प्रभावित लोगों की सहायता करता रहा।

अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती दीपा पाधी को 129वां भारतीय अनुभाग अधिवेशन–। की दिसम्बर में अध्यक्षता के लिये आमंत्रित किया गया था। सितम्बर में उत्कल फेडरेशन के 56वें अधिवेशन, जिसकी थीम थी ''ह्यूमैनिटी ऐन्ड बियॉण्ड'' में उन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

* * * * *

अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय टीएस अडयार चेन्नै, भारत में अडयार थियोसॉफिकल अकैडेमी की ऐडमिनिस्ट्रेटर, सोनल मुरली ने रिपोर्ट किया है कि दूसरे वर्ष भी कोविड 19 पेण्डमिक के कारण गतिविधियां ऑनलाइन चालू रखी गयीं। इसने अपना तीसरा वर्ष जून में 130 विद्यार्थियों के साथ नर्सरी से ग्रेड 4 तक प्रारम्भ किया गया। इसकी वार्षिकी बन्धु टिम बायड, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष मुख्य अतिथि के साथ मनाई गयी। एटीए के केन्द्र में स्टूडेंट/टीचर इंटरैक्शन हैं जिनका उद्देश्य ट्रान्सफार्मेटिव लर्निंग है। कोई भी दिन ''सर्किल टाइम'' से प्रारम्भ होता है जब बच्चे उन्हें जो कुछ भी कहना या दिखाना होता है उसे मेज पर सीधी वार्ता के लिये लाया जाता है। अनेक रूपों में ड्राइंग या मंडल आर्ट से कला और शिल्प का एक्सप्लोरेशन चालू रखा जाता है। वर्ष की अवधि में बच्चों की प्रकृति के साथ सफल लिंक घरों से ही नेचर लर्निंग के माध्यम से जारी रखा गया। खेलों, कहानियों और संगीत के माध्यम से तमिल और हिंदी भाषाओं में लगातार वृद्धि बनाये रखा



गया। थियेटर क्लास ग्रुप कम्युनिकेशन, कोआर्डीनेशन और ग्रुप कार्य को मन में प्रवाहित करते हैं।

एक विज्ञान हब विद्यार्थियों को प्रयोगों, डिजाइनिंग और प्रश्न करने में लगाये रखने के लिये चालू किया गया है। इन सब के अतिरिक्त खेलों और गानों के साथ स्कूल इवेंट्स जैसे संगीत कार्यक्रम, विज्ञान दिवस, और वार्षिक दिवस भी होते रहते हैं। शिक्षकों को सिस्टेमैटिक विचार, विकास की स्थितियां, अहिंसापूर्ण संचार, अंतर्निहित प्रश्न जैसे ''शिक्षा किस लिये है?'' आदि अनेक प्रकार के मानसिक विकास दक्षता तथा ज्ञान वर्धन कार्यक्रम दिये गये।

सुरेन्द्र नारायण आर्काइव्स के ऑफीसर इन चार्ज, बहन जयश्री कन्नन ने रिपोर्ट किया है कि महामारी की अवधि में कोई रिसर्चर आर्काइव्स में विजिट नहीं कर पाया। किन्तु 15 ऐसे रिसर्च स्कालर्स थे जिन्होंने रिसोर्सेस का ऑनलाइन प्रयोग किया है। उनकी आवश्यकताओं को स्कैनिग और कापीइंग के माध्यम से पूरा किया गया। 17 फरवरी 2022 को आर्काइव्स का शताब्दी वर्ष प्रारम्भ होगा। शताब्दी वर्ष को मनाने के लिये ऐसे अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन 2021 के बाद प्रारम्भ किया जायेगा।

अडयार म्यूजियम में, डा0 बर्न्ड जेसी ने अपना मूल्यवान स्वैच्छिक कार्य जारी रखा। वेंकटाचलम कलेक्शन में 2021 के अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन से लेकर, बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक के 100 से अधिक पेंटिंगें और हिन्दू कांस्य कृतियां हैं जो अनेक प्रकार से प्रिजर्व की गयी हैं। इन आर्टीफैक्ट्स की पहचान और सफाई का कार्य चल रहा है। इन वस्तुओं की फोटोग्राफी ने जितना सोचा गया था उससे कहीं अधिक समय ले लिया है। इसलिये अभी का तुरंत का फोकस अधिक महत्वपूर्ण वस्तुओं पर है। इनके अतिरिक्त डिस्प्ले रूम की कुछ अन्य वस्तुयें भी सम्मिलित हैं।

थियोसॉफिकल पब्लिशिंग हाउस ने रिपोर्ट किया है कि इस वर्ष की अवधि में पुस्तकों की विक्री रु 1.8 मिलियन हुई है जिसमें 0.8 मिलियन रॉयल्टी भी है। कोविड 19 की खलल के कारण, और ई बुक जैसे कुछ विकल्पों के कारण यह संख्या पिछले वर्ष से कम है। फिर भी 44 पुस्तकों को, जिनमें से अनेक की उपलब्धता नहीं थी को फिर से प्रिंट किया गया है। 22

पुस्तकों को स्कैन करके सॉफ्ट कापी के रूप में बदला गया है। द थियोसॉफिस्ट के मासिक ग्राहक भारत में 612 थे। त्रैमासिक अडयार न्यूजलेटर के 372 ग्राहक थे जिनमें से 256 भारत में थे। पीरियाडिकल्स के अतिरिक्त वसन्ता प्रेस ने कुछ अन्य पुस्तकें टीपीएच और अडयार लाइब्रेरी के लिये छापीं। उन्होंने 9 पुस्तकें, थियोसॉफिस्ट के 11 और अडयार न्यूजलेटर के 4 अंक छापे।

थियोसॉफिकल आर्डर ऑफ सर्विस 59 देशों जहां थियोसाफिकल सोसाइटी क्रियाशील है, में से 36 देशों में हैं तथा कुछ अन्य सेवा क्षेत्रों में भी क्रियाशील है, जैसा कि बहन नैन्सी सीक्रेस्ट, टीओएस की सचिव ने सूचित किया है। टीओएस त्रैमासिक न्यूजलेटर के माध्यम से पूरे संसार से सम्बन्धित है। इसकी वेबसाइट international.theoservice.org और फेसबुक लिंक facebook.com.tosinternational है। कोविड 19 के कारण बाधायें आयी हैं किन्तु इसके कारण अनेक अन्य लोग विश्व के अनेक भागों से ऑनलाइन संपर्क के माध्यम से इसके संसर्ग में आये हैं। ऑनलाइन गतिविधियां भारत और फिलीपीन्स से हुयी हैं। रिटायरमेंट के कारण अर्जेन्टिना, मेक्सिको और बोलीविया में नये निर्देशक नियुक्त हुये हैं। टीओएस इंग्लैंड से बड़ा डोनेशन भारत में कोविड 19 रिलीफ के लिये प्राप्त हुआ था। जिसको भारत के अनेक नगरों में भोजन और अन्य घरेलू सामान के रूप में वितरित किया गया। कोविड रिलीफ के लिये फेस मास्क, हैंड सैनेटाइजर्स और ऑक्सीजन टैंक वितरित किये गये। कुछ अडयार कर्मियों को जिनको बन्द के कारण आर्थिक कठिनाइयां आ गयी थीं, मेडिकल और आर्थिक सहायता भी भेजी गयी थी। पूरे संसार में अनेक टीओएस ग्रुपों ने उन्हें सहायता की जिन्हें भोजन, चिकित्सा, शैक्षिक और अन्य प्रकार की सहायता की आवश्यकता थी। जो रेगुलर योजनायें हैं उन्हें प्रायः मेन्टेन रखा गया। महिलाओं से सम्बन्धित अनेक प्रकरणों, शिक्षा और स्कालरशिप, और युवाओं को सम्मिलित करना अनेक ग्रुपों का केन्द्रीय लक्ष्य रहा है। साथ में एनीमल वेलफेयर और मानवीय सहायता भी केन्द्रीय विचार रहे हैं। इसके अतिरिक्त लगभग सभी देशों में हीलिंग ग्रुप थे।

टिम बायड

(द थियोसॉफिस्ट जनवरी 2022 से साभार)



# समाचार और टिप्पणियां

## बंगाल

बल्ली थियोसाफिकल लॉज का 108वां वार्षिक उत्सव 21 नवम्बर 2021 को शिशु समिति हाल, गोस्वामीपुरा रोड, बल्ली हावड़ा में संपन्न हुआ। आयोजन का प्रारम्भ सर्व धर्म प्रार्थना से प्रारम्भ हुआ जिसके उपरांत बन्धु ए. एन. चक्रबर्ती, उप सचिव द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उसके पश्चात् सचिव बन्धु जयदेब गोस्वामी ने लॉज की गतिविधि रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रो0 प्रहलाद कुमार सरकार, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, केलकाता विश्वविद्यालय ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। अपने भाषण में उन्होंने बन्धुत्व के मूल, जैसा थियोसॉफी बताती है, की बड़ी सुन्दरता से व्याख्या की। डा0 ऐनी बेसैन्ट के भारत में थियोसाफिकल आन्दोलन के प्रसार, और उनके भारत में शिक्षा के प्रसार में और विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा के प्रसार के बारे में याद दिलाया। बन्धु ए.एम.पात्रा नें मैडम ब्लैवैत्सकी द्वारा रचित 'गोल्डेन स्टेयर्स' के महत्व पर चर्चा की। बन्धु एस. बनर्जी जो एक आमंत्री थे, बन्धु ए. बनर्जी, बन्धु एच.के. हालदार, बन्धु पी.के. घोश, बन्धु एस. चटर्जी ने भी इस मौके पर चर्चायें कीं। सभा का अंत बन्धु जे. गोस्वामी द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

## केरल

थियोसॉफिकल सोसाइटी का स्थापना दिवस 17 नवंबर 2021 को ऑन लाइन मनाया गया। डा0 एम.ए. रवीन्द्रन, फेडरेशन अध्यक्ष, ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बैठक का प्रारम्भ विश्व प्रार्थना से किया गया। बन्धु के. दिनकरन, सचिव, के.टी.एफ. ने सदस्यों और व्याख्याताओं का स्वागत किया। डा0 रवीन्द्रन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में स्थापना दिवस के महत्व को बताया और उन घटनाओं पर प्रकाश डाला जो कर्नल ऑल्काट द्वारा सोसाइटी का उद्घाटन करने के पहले घटित हुयी थीं। अन्नपूर्णी लॉज अलेप्पी की बहन लक्ष्मीबाई ने एचपीबी के प्रकाशमान जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होने संकेत किया कि जब उनके सामने विकल्प रखा गया कि वे सीक्रेट डाक्ट्रीन को पूरा करना चाहेंगी या शरीर की कष्टदायी बीमारी से

मुक्ति पाना चाहेंगी, तब उन्होंने सीक्रेट डाक्ट्रीन को पूरा करने का विकल्प चुना था। गरीबों के लिये उनकी करुणा, अपने सारे आराम का त्याग उनकी महानता का प्रदीप्त उदाहरण है।

श्री शंकर लॉज, एर्नाकुलम की डा0 बीना, ने बताया कि सोसाइटी के संस्थापक कर्नल एच.एस. ऑल्काट एक लायर, एग्रीकल्चरिस्ट, लेखक, पत्रकार, हीलर और एक महान थियोसॉफिस्ट थे जिन्होंने धन, समय, शक्ति और अपना आराम सोसाइटी के लिये त्याग दिया। बन्धु एन. भास्करन नायर, उपाध्यक्ष, केटीएफ, ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत किये। बन्धु के. दिनकरन ने डब्ल्यू क्यू. जज द्वारा लिखित पुस्तकों जैसे ओशन ऑफ थियोसॉफी और भगवद्गीता, नोट्स ऑन भगवद्गीता और पातंजलि योग सूत्र को प्रदर्शित किया, जो उनके मूल्यवान योगदान हैं।

### मराठी

पूना लॉज के बन्धु नितिन अभ्यंकर ने श्वेत कमल दिवस के एक महीने के आयोजन में 8 ऑनलाइन वक्तव्य दिये। उन्होंने हिन्दुइज्म, जोरोस्ट्रिज्म, जैनिज्म, बुद्धिज्म, क्रिस्चियनिज्म, इस्लाम, सिक्खिज्म और डिवाइन विज्डम विषयों पर अपनी प्रस्तुतियां दीं। ये वक्तव्य ऐनी बेसैन्ट की सेवेन ग्रेट रिलीजन्स पुस्तक के आधार पर मराठी में दिये गये। ऐनी बेसैन्ट दिवस के उपलक्ष में बन्धु अभ्यंकर ने अक्टूबर 2021 मास में इवेन सीक की पुस्तक 'दामोदर और थियोसॉफिकल आन्दोलन के अग्रणी' के आधार पर मराठी में वक्तव्य दिये।

### उत्कल

प्रो0 प्रफुल्ल कुमार दास, अध्यक्ष बरबटी लॉज कटक ने 'गायत्री मंत्र का महत्व' विषय पर 22 नवम्बर 2021 को हुई लॉज की बैठक में वक्तव्य दिया। अन्य वक्ता जिन्होंने गायत्री मंत्र पर अपने विचार प्रस्तुत किया वे थे बन्धु सहदेब पात्रो, बन्धु सी.ए. शिन्दे और बन्धु बी.एस. मोहन्ती। बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा ने यूटीएफ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 'डिवाइन प्लान' विषय पर एक अध्ययन माला ऑन लाइन प्रस्तुत की जिसके 2 सत्र अक्टूबर और 3 सत्र नवम्बर में हुये।



बन्धु टिम बायड ने एक 3 दिवसीय अध्ययन माला भारतीय अनुभाग के आयोजन में 8 से 10 अक्टूबर 2021 में संचालित किया था। उनके द्वारा 8 अक्टूबर को दी गयी प्रस्तुति को उड़िया में अनुवाद करके बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा ने सिद्धार्थ लॉज के आयोजन में 26 अक्टूबर को ऑनलाइन प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त बन्धु महापात्रा ने 28 नवम्बर को पाइथागोरस लॉज और ओम स्टडी ग्रुप भुवनेश्वर के संयुक्त आयोजन में 'टाक्स ऑन द पाथ ऑफ अकल्टिज्म – लाइट ऑन द पाथ' पुस्तक के आधार पर एक प्रस्तुति दी।

### उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड

धर्म लॉज लखनऊ ने दि0 3, 10 और 24 नवम्बर 21 को ऑनलाइन बैठकें कीं, जिनमें क्रमशः बन्धु आर के पांडे ने 'लाइफ ऑफ डिसाइपल' विषय पर, बन्धु यू एस पांडे ने, 'दसावतार' और बन्धु अशोक कुमार गुप्ता ने 'एपीटोम ऑफ थियोसाफी' विषयों पर ऑनलाइन वक्तव्य दिये।

धर्म लॉज ने दिसम्बर 2021 में चार ऑनलाइन बैठकें आयोजित कीं जिनमें 'थियोसाफिकल शिक्षाओं के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु', 'आष्टांग मार्ग', 'एक शिश्य का जीवन (चार दीक्षायें)', 'कास्मॉस की उत्पत्ति और विकास' विषयों पर क्रमशः बन्धु यू.एस. पांडेय, बन्धु प्रमिल द्विवेदी, बन्धु बी के पांडेय और बन्धु अशोक कुमार गुप्ता ने अपने वक्तव्य दिये।

निर्वाण लॉज आगरा ने 11, 18 और 25 नवम्बर को 'अवेयरनेस', 'बुरी आत्मायें और मानसिक स्वास्थ्य' और 'सांख्य दर्शन' विषयों पर क्रमशः डा0 सी आर रावत, बन्धु आर.पी. शर्मा और डा0 विनोद शर्मा ने वक्तव्य दिये। 17 नवम्बर को स्थापना दिवस पर एक सिम्पोजियम आयोजित किया गया। 14 नवम्बर को भारत समाज पूजा संपन्न की गयी। लाज ने दिसम्बर में तीन बैठकें आयोजित कीं जिनमें 'यूनीवर्सल प्रार्थना', 'एचपीबी बोलीं' और 'राजा निम के प्रश्न और योगेश्वरों के उत्तर' विषयों पर क्रमशः बन्धु श्याम कुमार शर्मा, बन्धु प्रवीण मेहरोत्रा और बन्धु एच बी पांडेय ने प्रस्तुत कीं।

इसके अतिरिक्त निर्वाण लॉज के द्वारा 2 और 23 सितम्बर को सेमीनार आयोजित किये गये। इनके विषय 'थियोसाफी में होलसम की फीलिंग' और 'ओ हिडेन लाइफ इन एवरी एटम'। 12 दिसम्बर को भारत समाज पूजा

सम्पन्न की गयी।

प्रज्ञा लॉज लखनऊ ने नवम्बर में 5 ऑनलाइन बैठकें आयोजित की। इसमें जिन विषयों पर चर्चा हुई वे थे – 'टीएस अडयार के मुख्यालय भवन के प्रतीकों का महत्व', 'लाइट ऑन द पाथ और सुखमय जीवन के लिये संकेत', 'केन्द्र से जीना', 'होलिस्टिक स्वास्थ्य और और नेचरोपैथी'। वक्ता थे, क्रमशः विनय कुमार पात्री, बहन सैबीन वान ओस्टा, बेल्जियन सेक्शन की महासचिव, बहन सोनल मुरली और बहन वासुमती अग्निहोत्री। इसके अतिरिक्त बन्धु राजीव गुप्ता और बहन मान्सी भगत ने 'मनस शरीर' पर अपने विचार व्यक्त किये।

उपर्युक्त बैठकों के अतिरिक्त, प्रज्ञा लॉज ने लॉज के सदस्यों के लिये हिन्दी में कुछ बैठकें आयोजित कीं। 11 और 25 नवम्बर को ये बैठकें आयोजित हुयीं जिनके विषय थे 'सुखी जीवन के सूत्र भाग 4, सेवा' और 'क्रियेटिव साइलेंस' जिनके वक्ता थे बहन वासुमती अग्निहोत्री और बहन सुश्मजा तिवारी। इनके अतिरिक्त बन्धु शिखर अग्निहोत्री के द्वारा 18 नवम्बर को एक गाइडेड अवेयरनेस मेडिटेशन संचालित किया गया।

प्रज्ञा लॉज द्वारा 5 और 12 दिसम्बर को ऑनलाइन बैठकें आयोजित की गयीं। जिसमें बन्धु एस. रामन ने 'द सेल्फ' और डा0 राजीव गुप्ता ने 'ईथरिक डबल' विषय पर प्रस्तुतियां दीं। दि0 24 दिसम्बर को लॉज ने 'क्रिसमस का गूढ़ अर्थ' विषय पर एक वीडिओ कार्यक्रम यू टयूब में प्रकाशित किया।

सर्व हितकारी लॉज गोरखपुर ने दो ऑनलाइन बैठकें आयोजित कीं। डा0 अजय राय ने 'जर्नी' और 'ध्यान के समय जैविक परिवर्तन' विषयों पर दि0 7 और 21 नवम्बर को ये वार्तायें कीं।

सर्वहितकारी लॉज ने दिसम्बर में 5, 12, 19 और 26 दिसम्बर को ऑनलाइन बैठकें कीं। इनमें बन्धु अजय राय ने 'थियोसॉफी के तीन उद्देश्य' विषय पर, बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 'शब्द ब्रह्म' विषय पर बन्धु अजय राय ने 'आध्यत्मिक सूर्य' विषय पर, और बन्धु एस. के. पाण्डेय ने 'चेतना का एकत्व और उसके कार्य' विषय पर प्रस्तुतियां कीं।



दि0 7 नवम्बर को प्रयास लॉज गाजियाबाद द्वारा की गयी बैठक में भगवद्गीता के अध्याय 13, 14 और 15 का सार क्रमशः बन्धु स्मृति सागर मोहन्ता, बहन श्रुति गोयल और बन्धु बैभब पटनायक द्वारा प्रस्तुत किये गये। दि0 14 नवम्बर को भगवद्गीता के अध्याय 16, 17 और 18 का सार क्रमशः बहन सुहानी, बन्धु वंश और बहन उर्वशी ने प्रस्तुत किया। दि0 21 और 28 नवम्बर को आयोजित बैठकों में बहन सुव्रलिना मोहन्ती ने 'थियोसाफिकल सोसाइटी के उद्देश्य' और 'थियोसाफिकल शिक्षायें और उनका प्रयोग' विषयों पर वक्तव्य दिये।

दि0 5 दिसम्बर को हुई ऑनलाइन बैठक में प्रयास लॉज द्वारा आयोजित बैठक में बन्धु शिखर अग्निहोत्री और बहन कैटलीना ने 'थियोसाफिकल शिक्षायें और उनका प्रयोग' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त दि0 12, 19 और 26 दिसम्बर को 'ट्रिनिटी और ट्रैंगल (अध्याय 13 मास्टर्स ऐन्ड पाथ के आधार पर)', 'अध्याय 1, 2 और 3 कामेंटरीज ऑन लिविंग' और 'अध्याय 4 और 5 कामेंटरीज ऑन लिविंग' पर क्रमशः बहन सुव्रलिना मोहन्ती, बहन संध्या रानी और बहन मृदुला नायक ने वक्तव्य दिये।

बहन सुब्रलीना मोहन्ती ने बच्चों और युवा वर्ग के लिये प्रत्येक रविवार को 9.30 बजे प्रातः अध्ययन सत्र संचालित किये। नवम्बर 2021 में जो विषय कवर किये गये वे थे 'प्रयोगात्मक वृत्ति और प्रश्न करना' और 'अनुशासन'। दिसम्बर 2021 में जो विषय कवर किये गये वे थे 'प्रतिदिन के जीवन में सेवा का भाव' और 'देने का महत्व'।

नोयडा लाज के तत्वाधान में 7 और 21 नवम्बर को ऑनलाइन बैठकों में वायस ऑफ साइलेंस पुस्तक पर अध्ययन सत्र बहन ललिता खत्री ने चालू रखे गये।

चोहान लॉज कानपुर में बन्धु एस.एस. गौतम ने 7 नवम्बर को, 'ला आफ इन्कार्नेशन' पर वक्तव्य दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंन ऐनी बेसैंट की पुस्तक 'अ स्टडी ऑन कर्मा' पर 14, 21 और 28 नवम्बर को अध्ययन सत्र संचालित किये। 5, 12 और 26 दिसम्बर को बन्धु गौतम ने ऐनी बेसैंट की पुस्तक 'अ स्टडी ऑन कांससनेस' पर अध्ययन सत्र संचालित किये। दि0

19 दिसम्बर को बन्धु गौतम ने 'योग में आने वाली बाधायें' पर एक वक्तव्य प्रस्तुत किया।

काशी तत्व सभा वाराणसी के आयोजन में 26 नवम्बर को बन्धु विनाद शर्मा ने 'आध्यात्मिकता और हमारा जीवन' विषय पर एक वक्तव्य दिया। दि0 17 और 24 दिसम्बर को 'आध्यात्मिकता और हमारा जीवन' और 'भारतीय दिनचर्या की प्रतिमूर्ति डा0 ऐनी बेसैंट' विषयों पर क्रमशः बन्धु विनोद शर्मा और प्रो0 आशा यादव ने भाषण दिये।

आनन्द लॉज इलाहाबाद द्वारा दि0 7, 14 और 17 नवम्बर को पहले से रिकार्ड की गयी वक्तव्य 'वेदों का महत्व' विषय पर बन्धु सुदीप मिश्रा और 'ध्यान माला अध्याय 3 – सेवा' और 'थियोसाफी की स्थापना की योजना' विषयों पर बहन सुषमा श्रीवास्तव ने वक्तव्य दिये। दि0 21 और 28 नवम्बर को 'ध्यानमाला – आत्म त्याग' पर दो भागों में बहन रंजना श्रीवास्तव द्वारा प्रसारित किये गये। दि0 15 नवम्बर को बहन राधा बर्नियर का जन्मदिन मनाया गया।

आनन्द लॉज ने दि0 5, 12, 19 और 26 दिसम्बर को निम्नलिखित भाषण प्रसारित कियेः–

ऐनी बेसैंट की पुस्तक 'ध्यान माला के अध्याय साधन पाद' पर बहन ज्योत्सना श्रीवास्तव के द्वारा,

ऐनी बेसैंट की पुस्तक 'आध्यात्म माला' पर बहन ज्योत्सना श्रीवास्तव के द्वारा,

'जीवन की राह में छोटे छोटे दीप' पर बहन जी के अजीत

'आध्यात्मिक जीवन' पर बहन सुषमा श्रीवास्तव

## यूपी और उत्तराखण्ड फेडरेशन की कार्य–योजना

फेडरेशन द्वारा 'थियोसॉफी के मूल सिद्धांत' विषय पर एक ऑनलाइन वक्तव्य श्रृंखला का आयोजन किया गया है। जिनमें से प्रथम वक्तव्य बन्धु यू एस पाण्डेय द्वारा 'कर्म' विषय पर 5 दिसम्बर को प्रस्तुत किया गया। फेडरेशन के सदस्यों के अतिरिक्त, 25 विद्यार्थियों, प्राक्सिस विद्यापीठ के शिक्षकों और एक यूएसए से और अन्य फेडरेशनों के सदस्यों ने इस भाषण को सुना। भाषण



के पश्चात जीवन्त प्रश्नोत्तर भी हुआ। जनवरी 2022 से प्रत्येक महीने दूसरे और चतुर्थ रविवार को इस क्रम को चालू रखने की व्यवस्था है।

## विद्यार्थियों, शिक्षकों और युवा के लिये कार्यक्रम

'सेल्फ रियलाइजेशन थ्रू थियोसाफी' विषय पर 16 सप्ताहों का एक कार्यक्रम वसंत कन्या महाविद्यालय के सारे स्नातक और परास्नातक विषयों को प्रशस्त करने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है। इस कोर्स की विषय वस्तु में चरित्र निर्माण, जीवन की कलायें, उचित मूल्य निर्धारण और उचित व्यवहार पर जोर दिया गया है। कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को आने वाले जीवन की चुनौतियों के लिये तैयार करना है और आंतरिक शांति, सुख और उचित व्यवहार के गुणों को तैयार करना है। इस कोर्स के लिये 125 छात्राओं को पंजीकृत किया जा चुका है। इस कोर्स के रिसोर्स लोग हैं बहन उमा भट्टाचार्या, बन्धु वी नारायणन और बन्धु शिखर अग्निहोत्री हैं। इसके प्रथम दो सत्र 20 और 27 नवम्बर को बन्धु शिखर अग्निहोत्री संचालित कर चुके हैं। जो विषय कवर हो चुके हैं वे हैं 'थियोसाफी और भारतीय दर्शन के आधारभूत सिद्धांत' और 'कर्म का सिद्धांत और मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है'। इसके अतिरिक्त बन्धु अग्निहोत्री ने एक सत्र 4 दिसम्बर को 'विचारों की शक्ति' विषय पर संचालित की।

## अन्य फेडरेशनों को योगदानः–

### दिल्ली फेडरेशन में वक्तव्यः

बहन वासुमती अग्निहोत्री नें शंकर लॉज के आयोजन में दि0 20 नवम्बर 2021 को 'अष्ट्रावक्र गीता अध्याय 2' पर ऑनलाइन वक्तव्य दिया।

### एमपी एवम् राजस्थान फेडरेशन में वक्तव्यः

बेसैन्ट लॉज जोधपुर के निवेदन पर बहन बासुमती अग्निहोत्री ने 'इमोशन्स इन डेली लइफ' विषय पर 12 दिसम्बर 2021 पर चर्चा की।

### भारतीय सेक्शन के कार्यक्रम / कार्य में सहयोगः

बहन विभा सक्सेना ने 'मैन ऐण्ड हिज बाडीज भाग 3' पर 6 नवम्बर को अध्ययन सत्र संचालित किया किया। उन्होंने महात्मा पत्र संख्या 1 पर 12

नवम्बर को अध्ययन सत्र संचालित किया।

बहन सुव्रलिना मोहन्ती ने 12 दिसम्बर को 'वर्किंग ऑफ थियोसाफिकल ट्रेनिंग सेंटर' पर एक वक्तव्य प्रस्तुत किया।

बन्धु अजय राय ने 'एनर्जी मैट्रिक्स और ध्यान के समय होने वाले परिवर्तन' विषय पर 19 दिसम्बर को वक्तव्य दिया।

इलाहाबाद की बहन श्रीयशी ओझा और नोयडा की बहन विभा सक्सेना ने 30 दिसम्बर को क्रमशः 'अपने से बाहर देखना और थियोसॉफिकल सोसाइटी का पहला उद्देश्य' और 'केन्द्र सब जगह और परिधि कहीं नहीं' विषयों पर अपने वक्तव्य दिये।

बन्धु एस एस गौतम ने सेक्शन की पत्रिका 'द इण्डियन थियोसॉफिस्ट' दिसम्बर 2021 का हिन्दी में अनुवाद किया जिसे भारतीय सेक्शन ने प्रकाशित किया है।

**फोरमों के आयोजनों में योगदानः**

बहन क्रितिका गोयल ने 12 दिसम्बर 2021 को पुस्तक 'ऐन्सिएन्ट विज्डम' के अध्ययन का मॉडरेशन किया।

यंग इण्डियानें थियोसॉफिकल ग्रुप के तत्वावधान में रेलवे क्लब गोरखपुर में आयोजित कार्यक्रम में बन्धु एसबीआर मिश्रा ने 'स्पिरिचुअलिटी' विषय पर 30 दिसम्बर को वक्तव्य दिया।

**राष्ट्रीय वक्ताः**

बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने भारतीय सेक्शन के आयोजन में 7 नवम्बर को 'थियोसाफिकल कार्य के सिद्धांत' विषय पर प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय सेक्शन के आयोजन में महात्मा पत्र सं 2 के अध्ययन को दो सत्रों में दि0 19 ओर 26 नवम्बर को प्रस्तुत किया।

**तीन दिन का अध्ययनः**

बन्धु यू एस पांडे ने शर्ली निकोल्सन की पुस्तक 'ऐन्सिएन्ट विज्डम – माडर्न इन्साइट' पर अध्ययन दि0 23, 24, 25 नवम्बर 2021 को संचालित किया। बन्धु पाण्डे ने यह संकेत किया इस पुस्तक की अद्वितीयता और



उद्देश्य यह है कि किस प्रकार सनातन ज्ञान के सिद्धांत कुछ आधुनिक वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिक, कलाकारों आदि के विचारों में मूर्तरूप हो रहे हैं और इस प्रकार हम इन सिद्धांतों की सामान्य जीवन में और विशेष रूप में आध्यात्मिक जीवन में व्यावहारिकता को समझ सकते हैं। अध्ययन काल में उन्होंने पुस्तक के मूल बिन्दुओं के बारे में प्राक्कथन, प्रारम्भिक ज्ञापन, भूमिका और कुछ अध्यायों जैसे 'हीलिंग द वर्ड व्यू', 'होलोन्स और हायरार्की', 'टाइम अन्ड टाइमलेस', 'द टू इन वन', 'डिवाइन माइंड', 'प्रोग्रेसिव डेवलपमेंट', 'कर्मा', 'द सेल्फ ऐण्ड इट्स स्फियर्स', 'सेल्फ टांसफार्मेशन' और 'मैन द माइक्रोकाज्म'।

प्रत्येक दिन के सत्र के अंत में प्रतिभागियों के बीच गहन प्रश्नोत्तर हुये। 25 नवम्बर को समापन सत्र में प्रतिभागियों ने अध्ययन की विषयवस्तु और उसके प्रस्तुतीकरण के बारे में अपनी प्रशंसायें व्यक्त कीं। कार्यक्रम के समापन के समय बन्धु प्रदीप महापात्रा ने वक्ता और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा ने 'सत्य से बढ़ कर कोई धर्म नहीं है' विषय पर इन्द्रप्रस्थ लॉज दिल्ली के आयोजन में 7 नवम्बर को वक्तव्य दिया।

**अन्य देशों के और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सहयोगः–**

बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने बगोटा लॉज कोलम्बियन सेक्शन के आयोजन में 4 नवम्बर को 'दीवाली पर्व के प्रतीक' विषय पर ऑनलाइन प्रस्तुति की। उनकी पत्नी कैटलीना इसाजा कैन्टर ने उनके भाषण का स्पैनिश में अनुवाद प्रस्तुत किया।

**सीक्रेट डाक्टीन पर अंतराष्ट्रीय सेमीनारः–**

बन्धु यूएस पाण्डे ने ऐडमेंट लॉज मास्को रूस द्वारा आयोजित ऑनलाइन सेमीनार में एक स्पीकर और पेनलिस्ट के रूप में भाग लिया। सेमीनार की थीम थी 'सीक्रेट डाक्ट्रीन के स्लोक 9 स्टैंजा 1 – कॉस्मोजिनेसिस' दि0 20 नवम्बर को हुये इस सेमीनार में रूस, यूक्रेन, ग्रेट ब्रिटेन, ग्रीस, साउथ कोरिया, आस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, ब्राजील, यूएसए आदि अनेक देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

## पांचवीं अंतर्राष्ट्रीय थियोसॉफिकल कांग्रेसः–

थियोसाफिकल सोसाइटी की 146 वीं स्थापना दिवस के उपलक्ष में ऐडमेंट लॉज मास्को रूस द्वारा आयोजित ऑनलाइन कांग्रेस को 28 दिसम्बर पूर्वाह्न पर बन्धु यूएस पांडे को एक वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने 'सत्य क्या है' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। बन्धु पांडे ने 28 नवम्बर को 'श्लोक 4, स्टैंजा 1, सीक्रेट डाक्ट्रीन – कास्मोजिनेसिस' पर आयोजित सिम्पोजियम में भी वार्ता की।

## विदेशी पत्रिका में लेख का प्रकाशनः–

बन्धु यू एस पांण्डे द्वारा लिखित 'अब्सोल्यूट प्रिंसिपल – परब्रह्म' पर एक लेख रसियन थियोसॉफिकल वेक्टर जर्नल– 'अल्बैट्रॉस' के अंक 2 नवम्बर 2021 में प्रकाशित हुआ।

## तीन लॉजों के ज्वाइन्ट कार्यक्रम में अनुवादः–

ज्योति लॉज मुम्बई फेडरेशन और गुजरात फेडरेशन के रेवा और रोहित लाजों के संयुक्त आयोजन में बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने 23 दिसम्बर को 'हिडेन मीनिंग ऑफ क्रिसमस' में अंग्रेजी में दिये गये वक्तव्य का हिन्दी में अनुवाद ऑनलाइन प्रस्तुत किया।

## उद्घाटन भाषण का साथ साथ हिन्दी अनुवादः–

बन्धु यू एस पांडे ने अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त भारतीय सेक्शन के अधिवेशन 1 में 27 दिसम्बर को दिये गये भाषण का साथ साथ हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया।

## अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमो में योगदानः–

'वर्ल्ड यूनाइटेड' जो एक विश्व संगठन है जिसमें संसार के सभी प्रज्ञान घटकों का एकत्रित करने का आकर्शण केंद्र है और जो 'वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑफ स्पिरिचुअलिटी' आयोजित करती रही है, ने 'विश्व ट्रान्सफार्मेशन फेस्टिवल 2021' का आयोजन किया। इसमें बन्धु यू एस पांडे को आयोजकों द्वारा एक वक्तव्य के लिये आमंत्रित किया गया। इस प्रकार बन्धु पांडे ने 'दिव्य प्रज्ञान और विज्ञान' विषय पर 19 दिसम्बर 2021 को वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में बन्धु पांडे ने अनेक महत्वपूर्ण बातों की चर्चा की जैसे – दिव्य



प्रज्ञान और विज्ञान दोनो का ही एक उद्देश्य– अन्यान्य स्तरों पर सत्य की खोज; मानव को इन दोनों विधियों की आवश्यकता; आधुनिक विज्ञान की सीमायें; दोनो की पद्धतियों में अंतर और समानतायें; एक फंडामेंटल ला और तीन फंडामेंटल प्रपोजीशन जैसा कि सीक्रेट डाक्ट्रीन में उल्लेखित है और उनके बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण; कुछ वैज्ञानिक अनुसंधानों का दिव्य प्रज्ञान के सिद्धातों की ओर पहुंच; विज्ञान एक आध्यात्मिक मार्ग और दिव्य प्रज्ञान और विज्ञान की मानव के परिवर्तन में भूमिका। अपने भाषण में उन्होंने कुछ महान वैज्ञानिकों और अडेप्टों के उद्धरण दिये।

## टीएस के 146 वें अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में योगदानः–

बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजन में और आनलाइन सुधिाओं के प्रयोग में मुख्यालय अडयार में सहायतायें प्रदान कीं।

बन्धु यूएस पांडे 8 वक्तव्यों का जिन्हें 7 वक्ताओं ने प्रस्तुत किये थे, का साथ साथ हिन्दी में अनुवाद किया, जिनमें 27 दिसम्बर को ओपेनिंग और इनवोकेशन और पब्लिक लेक्चर 'अ लाइफ विदिन अ लाइफ' जिसे अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष बन्धु टिम बायड ने 30 दिसम्बर को प्रस्तुत किया था।

## शांति को प्राप्त

बन्धु हेमेंन्दु बिकाश चौधरी, डिप्लोमा सं0 98648 बीटीएस कोलकाता 17 दिसम्बर 2021 को शांतिलीन हुये। वे बीटीएस के अध्यक्ष और और बंगाल थियोसाफिकल फेडरेशन के उपाध्यक्ष थे। वे एक दयावान हृदय वाले महान व्यक्ति थे और वे अनेक सामाजिक और धार्मिक संगठनों से जुड़े हुये थे। वे एक जाने माने लेखक, बुद्धिस्ट साहित्य के विद्वान और प्रसिद्ध वक्ता थे। वे एक महान आयोजक, क्रियाशील कार्यकर्ता जो हर प्रकार के सामाजिक उत्थान में भाग लेते थे। हम उनकी शांतिपूर्ण यात्रा की कामना करते हैं।

## अनुमोदित अमेण्डमेंन्ट्स

भारतीय सेक्शन के सविधान में संशोधन 21 दिसम्बर 2021 को हुयी इण्डियन काउन्सिल की बैठक में अनुमोदित कर दिया गया और 27 दिसम्बर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, बन्धु टिम बायड द्वारा भी अनुमोदित कर दिये गये हैं।

भारतीय सेक्शन संविधान की नयी बुकलेट सारे लॉजों और इण्डियन सेक्शन काउंसिल के सदस्यों को भेज दी जायेगी।

**अडयार दिवस**

जूम प्लैटफार्म पर अडयार दिवस का आयोजन 6.00 से 8.00 सायं तक दि0 17 फरवरी को किया जायेगा। इस अवसर पर बन्धु प्रदीप एच गोहिल, भारतीय सेक्शन टीएस के अध्यक्ष 'थियोसॉफी और सत्य – अकल्ट की भूमिका'; बहन पूजा गोले द्वारा 'थियोसॉफी और सत्य – सी डब्ल्यू लेडबीटर', बहन श्रीयशी ओझा द्वारा 'जी ब्रूनो' और बन्धु दक्षिणामूर्ति द्वारा 'थियोसॉफी और सत्य– जे0 कृष्णमूर्ति' पर चर्चायें करेंगे।

अडयार गीत का गायन काशी तत्व सभा के सदस्य करेंगे।

प्रदीप महापात्रा

## प्रवेश शुल्क और वार्षिक देय से मुक्ति के संबंध में दिशानिर्देश

सदस्यों से भारतीय सेक्शन के द्वारा लिया जाने वाला वार्षिक देय और नये सदस्यों का प्रवेश शुल्क 1 जनवरी 2021 से समाप्त कर दिया गया है। इससे सम्बन्धित संविधान को इण्डियन सेक्शन काउन्सिल ने 20.12.2021 को और अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष ने 27.12.2021 को अनुमोदित कर दिया है। एक नया प्रवेश प्रपत्र सभी फेडरेशन सचिवों को प्रेषित किया जा चुका है और भारतीय सेक्शन की वेबसाइट पर अपलोड भी कर दिया गया है।

1. आधार कार्ड की प्रति जिस पर प्रार्थी के हस्ताक्षर हों प्रवेश प्रपत्र के साथ लगाई जायेंगी; उसे यह भी स्पष्ट करना होगा कि उसे 'इण्डियन थियोसाफिस्ट' की निशुल्क प्रति हिन्दी में चाहिये या अंग्रेजी में। उसका पूरा और विस्त्रित आवासीय पता होना चाहिये, ईमेल पता, उसका या 'केयर ऑफ' का, टेलीफोन नं0 उसका या 'केयर ऑफ' का और उसका अद्यतन फोटोग्राफ, जिनके बिना सदस्यता अनुमोदित नहीं की जायेगी।
2. प्रत्येक वर्तमान सदस्य को भारतीय सेक्शन मुख्यालय को "renewalindsecmem@gmail.com" पर अपना ईमेल नं0



प्रत्येक वर्ष दि0 30 सितम्बर 5 पीएम तक नीचे दिये गये फामैट में भेजना होगा जिसमें उसके हस्ताक्षर हों। यह आजीवन सदस्यों के लिये भी लागू होगा।

| मैं भारतीय सेक्शन, थियोसॉफिकल सोसाइटी, में अपनी सदस्यता बनाये रखना चाहता हूँ। | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ..... | ..... | ..... | ..... | ..... |
| सदस्य का नाम | लॉज का नाम | डिप्लोमा सं. | सदस्य के हस्ताक्षर | तिथि |

3. उपर्युक्त प्रारूप में पूर्णतया भरे हुये और हस्ताक्षरित प्रति को स्कैन कर के उपर्युक्त ई मेल पते पर 1 जुलाई से 30 सितम्बर के मध्य भेज दें। डाक से भेजे गये प्रपत्र मान्य नहीं होंगे।
4. एक ही स्थान पर रहने वाले एक ही परिवार के लोगों के लिये एक प्रति पर्याप्त होगी, किन्तु सभी सदस्यों को उसे हस्ताक्षरित करना होगा।
5. कोई लॉज (फेडरेशन नहीं) सभी बुजुर्ग सदस्यों के आइटेम सं0 2 पर दिये फामैट में एक ही पेज पर हस्ताक्षरों के साथ स्कैन कर के उपर्युक्त ई मेल पर भेज सकता है।
6. सदस्यों को कोई अंतर्राष्ट्रीय शुल्क या फेडरेशन शुल्क नहीं देने होंगे। किन्तु यदि लॉज शुल्क है तो उसे देना होगा। लॉजों की कोई आजीवन सदस्यता नहीं होगी।
7. इण्डियन थियोसॉफिस्ट का कोई शुल्क नहीं होगा किन्तु उन्हें स्पष्ट करना होगा कि उन्हें हिन्दी प्रति चाहिये या अंग्रेजी प्रति।
8. अप्रैल 2023 से प्रारम्भ करके प्रत्येक फेडरेशन को रु 75 प्रति सदस्य (आजीवन सदस्यों को छोड़ कर) जैसा कि पिछले वर्ष के 1 अक्टूबर को था, थियोसाफी के प्रसार के लिये भेजे जायेंगे। सदस्यता की जो संख्यायें आई एस एम एस में दी गयीं होंगी वही अंतिम मानी जायेंगी। इसलिये, लॉज और फेडरेशन अपने अंकों को सितम्बर के प्रथम सप्ताह में जांच लें और यदि कोई अंतर आ रहे हैं तो उन्हें भारतीय सेक्शन से विशुद्ध करवायें। फेडरेशनों के आजीवन सदस्यों के बारे में वही नीतियां

रहेंगी जो पहले से चली आ रही हैं। प्रचार राशि के आडिट किये हुये लेखा रखे जानें चाहिये और फरवरी में भारतीय सेक्शन को और अधिक धन की मांग के लिये प्रस्तुत किया जाना चाहिये।

9. प्रत्येक लॉज को एक रजिस्टर बनाना होगा जिसमें सदस्यों की सूची बनाई जाय और उन तिथियों को अंकित किया जाये जिनको बैठकें की गयीं हैं साथ में वे विषय जिन पर चर्चा हुयी।
10. लॉज सचिव और अध्यक्ष और लॉज काउंसिल का यह प्राइमरी दायित्व होगा कि वे सुनिश्चित करेंगे कि जो नया सदस्य जिन्हें प्रवेश दिया जा रहा है कि उसके भूत काल के कोई धन देय तो नहीं है और वे थियोसाफिकल सोसाइटी की सदस्यता के लिये हर प्रकार से योग्य हैं।
11. फेडरेशन को अब से कोई एडीएस नहीं भेजने होंगे केवल उन सदस्यों के अतिरिक्त जिनके नाम पर 1अक्टूबर 2021 तक कोई धन देय है। फिर भी, उन्हें नये सदस्यों के प्रवेश प्रपत्र उनकी शाख की जांच करने के बाद भारतीय सेक्शन कार्यालय को भेजने होंगें।
12. फेडरेशन को भारतीय सेक्शन कार्यालय को प्रत्येक वर्ष 30 सितम्बर तक (आजीवन सदस्यों के साथ) उन सदस्यों की सूची भेजनी होंगी जो पिछले 12 महीनों में शांति को प्राप्त हुये हैं और वे जिन्होंने सदस्यता त्याग दी है।
13. उपर्युक्त प्रारूप में पूर्णतया भरे हुये और हस्ताक्षरित प्रति को स्कैन कर के उपर्युक्त ई मेल पते पर 1 जुलाई से 30 सितम्बर के मध्य भेज दें। डाक से भेजे गये प्रपत्र मान्य नहीं होंगे।
14. एक ही स्थान पर रहने वाले एक ही परिवार के लोगों के लिये एक प्रति पर्याप्त होगी, किन्तु सभी सदस्यों को उसे हस्ताक्षरित करना होगा।
15. कोई लॉज (फेडरेशन नहीं) सभी बुजुर्ग सदस्यों के आइटेम सं0 2 पर दिये फामैट में एक ही पेज पर हस्ताक्षरों के साथ स्कैन कर के उपर्युक्त ई मेल पर भेज सकता है।
16. सदस्यों को कोई अंतर्राष्ट्रीय शुल्क या फेडरेशन शुल्क नहीं देने होंगे। किन्तु यदि लॉज शुल्क है तो उसे देना होगा। लॉजों की कोई आजीवन सदस्यता नहीं होगी।



17. इण्डियन थियोसॉफिस्ट का कोई शुल्क नहीं होगा किन्तु उन्हें स्पश्ट करना होगा कि उन्हें हिन्दी प्रति चाहिये या अंग्रेजी प्रति।
18. अप्रैल 2023 से प्रारम्भ करके प्रत्येक फेडरेशन को रु 75 प्रति सदस्य (आजीवन सदस्यों को छोड़ कर) जैसा कि पिछले वर्ष के 1 अक्टूबर को था, थियोसाफी के प्रसार के लिये भेजे जायेंगे। सदस्यता की जो संख्यायें आई एस एम एस में दी गयीं होंगी वही अंतिम मानी जायेंगी। इसलिये, लॉज और फेडरेशन अपने अंकों को सितम्बर के प्रथम सप्ताह में जांच लें और यदि कोई अंतर आ रहे हैं तो उन्हें भारतीय सेक्शन से विशुद्ध करवायें। फेडरेशनों के आजीवन सदस्यों के बारे में वही नीतियां रहेंगी जो पहले से चली आ रही हैं। प्रचार राशि के आडिट किये हुये लेखा रखे जानें चाहिये और फरवरी में भारतीय सेक्शन को और अधिक धन की मांग के लिये प्रस्तुत किया जाना चाहिये।
19. प्रत्येक लॉज को एक रजिस्टर बनाना होगा जिसमें सदस्यों की सूची बनाई जाय और उन तिथियों को अंकित किया जाये जिनको बैठकें की गयीं हैं साथ में वे विषय जिन पर चर्चा हुयी।
20. लॉज सचिव और अध्यक्ष और लॉज काउंसिल का यह प्राइमरी दायित्व होगा कि वे सुनिश्चित करेंगे कि जो नया सदस्य जिन्हें प्रवेश दिया जा रहा है कि उसके भूत काल के कोई धन देय तो नहीं है और वे थियोसाफिकल सोसाइटी की सदस्यता के लिये हर प्रकार से योग्य हैं।
21. फेडरेशन को अब से कोई एडीएस नहीं भेजने होंगे केवल उन सदस्यों के अतिरिक्त जिनके नाम पर 1अक्टूबर 2021 तक कोई धन देय है। फिर भी, उन्हें नये सदस्यों के प्रवेश प्रपत्र उनकी शाख की जांच करने के बाद भारतीय सेक्शन कार्यालय को भेजने होंगें।
22. फेडरेशन को भारतीय सेक्शन कार्यालय को प्रत्येक वर्ष 30 सितम्बर तक (आजीवन सदस्यों के साथ) उन सदस्यों की सूची भेजनी होंगी जो पिछले 12 महीनों में शांति को प्राप्त हुये हैं और वे जिन्होंने सदस्यता त्याग दी है।

प्रदीप एच गोहिल
अध्यक्ष
भारतीय सेक्शन

# 2022 के लिये एक्जीक्यूटिव कमेटी

## दि0 22.12.2021 को हुयी भारतीय सेक्शन काउन्सिल की बैठक के अनुसार

1. श्री प्रदीप एच गोहिल
अध्यक्ष, भारतीय सेक्शन
थियोसॉफिकल सोसाइटी
कामाच्छा वाराणसी 221010
मोबाइल नं0 09824214891
ई मेल theosophyvns@gmail.com
phgohilexcel@gmail.com

2. श्री वी नारायनन
कोशाध्यक्ष, भारतीय सेक्शन
थियोसॉफिकल सोसाइटी
कामाच्छा वाराणसी 221010
मोबाइल नं0 09793888596
ई मेल auroson@gmail.com

3. श्री नरेशभाई ए. त्रिवेदी
305, नन्दनवन एपार्टमेंट
बी/एच द्वारकाधीश मार्केट,
सरदार बाग के सामने
जूनागढ़ 362001 गुजरात
मोबाइल नं0 09879065200
लैंडलाइन नं0 0285–2630281
ई मेल nareshtrivedi82@gmail.com

4. श्री सी ए शिंदे
उपासिका
थियोसॉफिकल सोसाइटी अडयार
चेन्नै 600020
मोबाइल नं0 9940140228
ई मेल cashinde22@gmail.com

5. श्रीमती उमा भट्टाचार्या
भारतीय सेक्शन, थियोसाफिकल
सोसाइटी, कामाच्छा, वाराणसी 221010
मोबाइल नं0 9648742212
ई मेल umabhattacharyya15@gmail.com



6. श्री एस जी सनतकुमार
112/4 डायोग्नल रोड
सिण्डीकेट बैंक के पीछे
वी वी पुरम, बंगलौर 560004
मोबाइल नं0 09448856179
ई मेल akhilvijay12@gmail.com

7. श्री एन सी कृष्णा
10.283/1/5, प्लॉट सं0 84
वसन्तपुरी कालोनी, मल्काजगिरि,
हैदराबाद – 5000047
मोबाइल नं0 0966355661
ई मेल nck.krishna@gmail.com

8. श्री यू एस पांडेय
ए–893, इंदिरा नगर, लखनऊ 228016
मेबाइल नं0 09451993170
ई मेल usplko@gmail.com

9. श्री वाई पी देसाई
केयर डा0 ए पी देसाई
''देव पार्क'' एफ/3, प्रथम तल,
विद्युत नगर रोड, वेरावल 362266 गुजरात
मोइाइल नं0 09426982156
ई मेल aydesai44@yahoo.com

10. श्री एस एल दर
''रघुकुलम'', बी–21/81, कामाच्छा,
वाराणसी
मोबाइल नं0 9415221425
ई मेल snldar@gmail.com

11. डा0 सी पी भूयन
96, होम्यो कालेज रोड,
पंजाबरी गुवाहाटी 781037
मोबाइल नं0 9864508789
ई मेल cpbhuyan@gmail.com

# राष्ट्रीय वक्ताओं की सूची 2022
## (5.1.2022 को एक्जीक्यूटिव कमेटी की बैठक के अनुमोदन के अनुसार)

श्री सी ए शिंदे
उपासिका,
थियोसॉफिकल सोसाइटी अडयार चेन्नै 600020
मोबाइल नं0 9940140228
ई मेल cashinde22@gmail.com

श्री बी डी तेन्दुलकर
बिल्डिंग जी1, प्लॉट सं0 14, द्वितीय तल एच आई जी स्कीम, एम एच बी कालोनी, जनवाड़ी, पुने 411016
मो नं0 09881519108, लैण्ड लाइन 020– 25652393
ई मेल b.tendulkar@yahoo.com

श्री एस के पाण्डेय
4/136, कल्पना कुटीर, शुक्ला गंज,
पो.आ. गंगाघाट, उन्नाव 209861
मो0 नं0 09839817036, 07905515803
ई मेल sheo_2010@rediffmail.com

श्री डी दक्षिणामूर्ति
फ्लैट जी 3, देवगिरि मीडोज, 1781, 14 मेन, 34 क्रास, बीएसके–2 स्टेज, बैंगलोर, कर्नाटक 560070, मोबाइल नं0 09986023299
ई मेल gdm23@rediffmail.com

श्री अशोक प्रताप लेखण्ड
प्लॉट नं0 68, माधव नगर, नागपुर 440010
मोबाइल नं0 09822734680
ई मेल meenalokha.ms18@yahoo.com

श्री एन सी कृष्णा
10.283/1/5, प्लाट सं0 84 वसन्तपुरी कालोनी, मल्काजगिरि, हैदराबाद – 5000047
मोबाइल नं0 0966355661
ई मेल nck.krishna@gmail.com

डा0 एल नागेश
101, 2 क्रास, 4 मेन इन्कमटैक्स, लेआउट विजयनगर, बैंगलोर 560040, कर्नाटक
मो0 नं0 09844035470 लैंडलाइन नं0 080–23396000
ई मेल drlnagesh72@gmail.com

श्री शिखर अग्निहोत्री
एम एम बी 1/111, एस बी आई कालोनी जानकी पुरम, सीतापुर रोड, योजना लखनऊ 226021
मो0 नं0 09839912070, लैंडलाइन 0522–4103468
ई मेल shikhar9379@gmail.com

डा0 बिपुल सर्मा
चक्रवर्ती लेन, टार्जन, जोरहट 785001 आसाम
मोबाइल नं0 09435357432
ई मेल dr.kanaibs@rediffmail.com



श्री आर वी वास्ट्राड
चैतन्य श्री हरि कालोनी, के एच बी कालोनी के पीछे, गांधी नगर, बेल्लारी 583103 कर्नाटक
मोबाइल नं0 09448572511
ई मेल vatradrv@gmail.com

श्री हरिहर राघवन
मद्रास फेडरेशन, गोविन्द विलास,
थियोसॉफिकल सोसाइटी, अडयार, चेन्नै 600020
लैंडलाइन नं0 044–24911569

श्रीमती सोनल मुरली
बेसैंट बैंगलो, 1, बेसैंट एवन्यू,
थियोसॉफिकल सोसाइटी, अडयार, चेन्नै 600020
मोबाइल नं0 9049867345
ई मेल mrigshirsha@gmail.com

श्री नरसिम्ह ठाकरिया
ए/201, सनाय रेजीडेन्सी, परसुराम गार्डेन के सामने अदजान, सूरत 395009
मोबाइल नं0 94426362253
ई मेल divyarajthakaria1310@gmail.com

श्री यू एस पांडेय
ए–893, इंदिरा नगर, लखनऊ 228016
मोबाइल नं0 09451993170
ई मेल usplko@gmail.com

श्री प्रदीप महापात्रा
प्लाट सं. 625 शहीद नगर, भुबनेश्वर, उडीसा 751007
मोबाइल नं0 09437697429
ई मेल peekemo277@gmail.com

श्री नन्दकुमार नारायण राउत
मधुमती एपार्टमेंट्स फलैट नं0 8, मोहिते प्लॉट्स, छोटी उमरी, अकोला, महाराष्ट्र 444005
मोबाइल नं0 09975722582
ई मेल nandkumarnrout@gmail.com

बहन विभा सक्सेना
सचिव, नोयडा थियोसॉफिकल लॉज, नोयडा, एन सी आर, उ0प्र0
मोबाइल नं0 9891411972
ई मेल vsaksena@yahoo.co.uk

डा0 पी सारथी प्रसाद सारंगी
कटक लॉज, कटक, उड़ीसा,
मोबाइल नं0 9437495702
ई मेल pspsarangi@gmail.com

श्री राजीव गुप्ता
ई ए–434, माया इन्क्लेव, हरि नगर, नयी दिल्ली 110064
ई मेल drrajivgupta@gmail.com

श्री श्याम सिंह गौतम
प्लॉट नं0 11, शक्ति नगर, रामादेवी, कानपुर 208007
मोबाइल नं0 918005187037
ई मेल shyamgautam11@rediffmail.com